

कक्षा में दीगर किताबें

शहनाज़ डी.के.

विद्या भवन द्वारा बच्चों तक पुस्तकें पहुंचाने का जो कार्य किया जा रहा है उसी क्रम में मैं अपनी कक्षा में चल रही क्लास लाइब्रेरी के संबंध में आपको बताना चाहती हूं।

विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि, गांव में उदयपुर शहर से 7 किलोमीटर दूर स्थित है। हमारे विद्यालय में इस समय 411 विद्यार्थी कक्षा 1 से 10 तक अध्ययन कर रहे हैं। इनमें कुल आस–पास के 8 गांव से विद्यार्थी आते हैं। यह विद्यालय सन् 1941 से गांधी की बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों पर चलाया जा रहा है। यहां प्रारम्भ से बच्चे कताई, बुनाई, खेती आदि उद्योग सीखते थे। परन्तु अब विद्यालय में सुथारी, सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, घरेलू विद्युत मरम्मत, हस्तनिर्मित काग़ज़ आदि उद्योग सीख रहे है। प्राथमिक कक्षाओं में (कक्षा 3 से 5) हुनर सीखने की शुरुआत और आगे की तैयारी के लिए सुथारी, सिलाई के अलावा बाग़वानी और मिट्टी के खिलौने बनाने का काम भी करते हैं। इस तरह बुनियादी विद्यालय में जो शिक्षा दी जा रही है उसमें काम को तवज्जोह दिया जाता रहा है। और काम से ज्ञान का निर्माण कैसे हो इसके भरसक प्रयत्न किए जाते हैं।

मैं पिछले तीन वर्षों (2005) से अपनी कक्षा तीसरी और चौथी के बच्चों को दीगर किताबें देने का कार्य कर रही हूं। मैं इस संदर्भ में सबसे पहले अपने स्कूल में आनेवाले बच्चों के बारे में बताना चाहती हूं।

इस विद्यालय में आस–पास के गांव से आनेवाले अधिकांश बच्चे सुथार, राणा, डांगी, पंवार, सेन, गमेती, मेघवाल आदि जाति के हैं जिनकी स्थिति निम्न–मध्यम वर्गीय परिवार की हैं। इनमें से अधिकतर बच्चों के

माता–पिता खेती, दूध बेचने का, ड्राइविंग और मज़दूरी जैसे व्यवसायों से जुड़े है। इसलिए कई बच्चों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही उनके लिए मुश्किल होता है। ऐसी स्थिति में कोई अन्य ख़र्च नहीं उठा पाते हैं। इनके घर पाठ्यपुस्तकों के अलावा किसी और पुस्तक के होने की कोई संभावना नहीं होती और न ही उनके माता–पिता इसकी आवश्यकता समझते हैं।

माता–पिता का शैक्षिक स्तर भी 8 वीं से 12 वीं तक का है। इस कारण वे पढ़ाई में पुस्तकालय के महत्त्व को भी बेहतर तरीक़े से नहीं जान पाते। उनके लिए पाठ्यपुस्तकें पढ़कर अच्छे अंक लाना ही बच्चों का काम है। इसके अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक की आवश्यकता बच्चों को नहीं है, वे ऐसा सोचते हैं। ऐसी स्थिति में उनकी भाषा की समझ नहीं बन पाती और उनसे पाठ्यपुस्तकों को पढ़कर समझने की उम्मीद नहीं की जा सकती।

कक्षा में बच्चों की पढ़ने और समझने की समस्या को लेकर बहुत परेशानी होती है। वर्ष 2005 में चौथी कक्षा के साथ काम करत हुए मुझे बहुत दिक़्क़त हो रही थी। मेरी कक्षा में तीन बच्चे ऐसे थे जिन्हें अक्षर–ज्ञान ही था और वे शब्द नहीं पढ़ पाते थे। कई बच्चे ऐसे थे जो शब्दों का उच्चारण तो कर लेते थे परन्तु अर्थ समझना उनके लिए सभंव नहीं था। इनकी पढ़ने की समस्या दूर करने के लिए मेरे दिमाग़ में बार–बार एक ही विचार आता कि इनकी पढ़ने की रुचि बढ़े और ये किताबों की तरफ़ आकर्षित हों लेकिन कैसे? क्योंकि उनके पास पढ़ने के लिए केवल पाठ्यपुस्तकें ही थीं। वो भी एकदम नीरस और बेजान जिसे बार–बार पढ़ना, बच्चों की किताबों से दूरी को ओर बढ़ा रहा था। घर पर उनके पास कोई किताब होती नहीं है, लाइब्रेरी उन्होंने कभी देखी नहीं, स्कूल की लाइब्रेरी में भी छोटे बच्चों के लिए कोई किताब नहीं होती और न ही रीडिंग का कोई पीरियड दिया जाता है। ऐसे हालात में उनकी पढ़ने की क्षमता को बेहतर करने के लिए मुझे एक रास्ता दिखाई दिया। मैंने अपनी स्कूल की लाइब्रेरी में पुरानी चकमक की किताबें देखी थी जिनको मैं क्लास में ले आई। बच्चों से कहा कि ये आपके लिए हैं। जब चाहो पढ़ना। ये सुनकर बच्चे चकमक पर टूट पड़े। ऐसा लगा जैसे किसी भूखे को खाना मिल गया हो। मैंने सोचा कि जब ये बच्चे पढ़ने को इतने लालायित हैं तो इनकी इस रुचि को क्यों नहीं बढ़ाया जाए? मुझे लगा कि इनके लिए मुझे क्लास में ही किताबें लाने का इन्तज़ाम करना पड़ेगा। और मैंने अपनी कोशिश शुरू कर दी। स्कूल की प्रमुख लाइब्रेरी से मैंने कुछ बच्चों के पढ़ने लायक किताबें छांटी और उनको अपनी क्लास में रख दिया। ये किताबें मेरे नाम से इश्यू की गई थीं इसलिए इनके खोने की ज़िम्मेदारी मेरी थी। बच्चे इस बात को समझ रहे थे और वे उसे क्लास में पढ़कर संभालकर रख देते। धीरे–धीरे अधिकांश बच्चों का रुझान किताबों की तरफ़ बढ़ने लगा और वे मन लगाकर पढ़ने लगे। कुछ बच्चे किताबों की तरफ़ ध्यान नहीं देते थे क्योंकि उनको किताब पढ़ना ही नहीं आता था। मैंने उनके साथ कुछ गतिविधि करना शुरू किया। इसमें ''खिलौने का पन्ना'' और ''काग़ज़ से बनाओ'' वाले पेज से उनको परिचित करवाया और कुछ चीज़ें बनाकर दिखाई जिससे वे बिना पढ़े भी संकेतों को समझकर कुछ–कुछ चीज़ें बनाने लगे और किताबों को हाथ में लेने लगे। इससे उनकी किताबों से दूरी कुछ कम हुई।

कई बच्चे ऐसे थे जो शब्दों का उच्चारण तक कर लेते थे परन्तु अर्थ समझना उनके लिए संभव नहीं था। इनकी पढ़ने की समस्या दूर करने के लिए मेरे दिमाग में बार–बार एक ही विचार आता है कि इनकी पढ़ने की रुचि बढ़े और ये किताबों की तरफ़ आकर्षित हों लेकिन कैसे? क्योंकि उनके पास पढ़ने के लिए केवल पाठ्यपुस्तके ही थी। वो भी एकदम नीरस और बेजान जिसे बार–बार पढ़ना, बच्चों की किताबों से दूरी को ओर बढ़ा रहा था।

मैंने अपनी क्लास के एक कोने में टेबल पर किताबों को एक साथ रख दिया क्योंकि शुरु आत में मेरे पास केवल चकमक किताबें ही थी इसलिए उसे छांटने की कोई ज़रूरत नहीं थी। बच्चों को सप्ताह के तीन दिन ही केवल एक–एक पीरियड पढ़ने के लिए दिया गया था। परन्तु वे

जब भी क्लास में अपना विषय का काम कर चुके होते तो उन्हें किताबें देखने की छूट थी।

कुछ सप्ताह बाद मुझे लगने लगा कि बच्चों का किताबों से मन भर गया है क्योंकि उनके पास एक ही तरह की किताबें थीं जो सभी की रुचि और पसंद के अनुसार नहीं थी। तब मैंने बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए चकमक से कुछ गतिविधि करवानी शुरू किया। बच्चों के साथ मिलकर मैंने वर्ग–पहेली हल की, काग़ज़ से बनाओ के तहत हमने मिलकर चीज़ें बनाई, अपना खिलौना बनाओवाली एक्टिविटी उन्होंने घर ले जाकर भी की। इस तरह कुछ सप्ताह बच्चे किताबों में लगे रहे। इसी बीच जो बच्चे पढ़ने से जी चुराते थे वे धीरे–धीरे थोड़ा पढ़ने लगे और जो पहले से थोड़ा पढ़ते थे उनकी पढ़ने की गति बढ़ने लगी।

अब बच्चे चौथी से पांचवीं में आ गए थे और यहां की भी टीचर मैं ही थी। क्लास लाइब्रेरी के काम को आगे बढ़ाने के लिए इस साल (2006) भी मुझे ही काम करना था। अब तक यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ गई थी कि कुछ बच्चे जिन्हें पढ़ना नहीं आता है वे भी किताबों में कम से कम चित्र देखते हैं और चित्रों को ही पढ़ते है, चित्रों पर ही बातचीत करते हैं। इसलिए उनके लिए वे किताबें ज़्यादा उपयोगी थीं जिनमें केवल चित्र हों और लिखा हुआ कम हो। अब दूसरी प्रकार के बच्चे जिन्हें पढ़ना तो आता था परन्तु उनको पढ़ी गई बात समझ में नहीं आती थी इसलिए चकमक में उनकी कोई ज़्यादा रुचि नहीं थी। उसमें से वे केवल सरल कविताएं ही पढ़ते थे। कोई भी लम्बा पाठ्य या बड़ी कहानी बच्चे नहीं पढ़ पाते थे। और तीसरी तरह के बच्चे जो पढ़ा हुआ समझ भी पाते थे। इनकी संख्या काफ़ी कम थी लेकिन इनकी रुचि सब तरह की किताबों में थी। वे कविताएं, कहानियां, विज्ञान की बातें, वर्ग–पहली, नाटक आदि सभी तरह की रचनाओं को पढ़ने में रुचि दिखाते थे।

कुछ सप्ताह बाद मुझे लगने लगा कि बच्चों का किताबों से मन भर गया है क्योंकि उनके पास एक ही तरह की किताबें थीं जो सभी की रुचि और पसंद के अनुसार नहीं थी।

इस प्रकार अलग–अलग तरह के बच्चों के लिए मैंने स्कूल की प्रमुख लाइब्रेरी से तीन–चार प्रकार की किताबें छांटी जिनमें केवल चित्रों वाली (गुब्बारा, कौवा, आम), सरल कहानियोंवाली (नाव चली, बिल्ली बच्चे आदि) और सीबीटी, एनबीटी आदि की कहानियों की किताबें थीं परन्तु इन सब किताबों की संख्या बहुत ही कम थीं और इसे लाइब्रेरियन ने मेरे नाम से इश्यू किया था जिसकी ज़िम्मेदारी मेरी थी। लेकिन किताबें ख़राब होने पर उनका पैसा मुझे भरना पड़ेगा ये बात बच्चों को बताए जाने पर उन्होंने किताबों की देखभाल की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। वे अपने पढ़ने के समय में किताबें लेकर पढ़ते और उसे सम्भालकर फिर रखते क्योंकि किताबें ज़्यादा नहीं थी इसलिए फटते ही फिर वे इसे चिपका देते और रैक पर रख देते। वे जानते थे कि वे ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें पढ़ने के लिए किताबें मिलना मुश्किल है।

जब बच्चों को पढ़ने में मज़ा आने लगा तो वे किताबों को घर ले जाने की मांग करने लगे। मैं तो यही चाहती थी कि उनके साथ–साथ उनके घर के लोग भी इसका फ़ायदा उठा सके। इस काम को मैंने कक्षा मॉनिटर और रोल नंबर से एक–एक की मदद से किया। एक रजिस्टर में बच्चों के नाम का हर पेज लिख दिया और पूरे महीने वे जितनी किताबें घर ले जाते उसका रिकॉर्ड रजिस्टर में रखते। यह काम ज़्यादा नहीं चल पाया। बच्चों ने बताया कि इश्यू करनेवाले को पढ़ने का समय ही नहीं मिल पाता है। इसलिए इसे बदलना पड़ा। फिर बच्चे कौन सी किताबें घर ले गए उनका रिकॉर्ड मैं ही रखती। लेकिन बच्चे कई बार किताबें लाना भूल जाते और इस तरह से साल के अंत में कुछ किताबें खो गई। इस वजह से लाइब्रेरियन मुझ पर नाराज़ भी हुई।

जब बच्चों ने किताबों के साथ लापरवाही बरती तो उन्हें इस बात का एहसास कराना ज़रूरी था कि वे ग़लत काम कर रहे हैं। इसलिए मैंने सोचा कि जो किताबें खो गईं वो

सबसे आख़री बार किसे दी गई थी वो उसे जमा कराएं तभी उसे नई किताब मिलेगी। जब तक किताब जमा नहीं करते तब तक केवल क्लास में पढ़ सकते है घर नहीं ले जा सकते। इसका कुछ प्रभाव पड़ा और बच्चे किताबें लाना याद रखने लगे।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों का किसी भी चीज़ में मन जल्दी भर जाता है और वे फिर उससे बेरुख़ी दिखाने लगते हैं। इसलिए मैं पूरे सालभर की किताबें एक साथ क्लास में नहीं लाती थी। पत्रिकाओं की तो हर महीने एक–एक कॉपी नई आ जाती थी साथ ही सीबीटी और एनबीटी की किताबें भी। मैं 30–30 का सेट पूरा बदल करके लाइब्रेरी से नया ले आती जिसमें तरह–तरह की कहानियां आदि होती हैं। मैंने अभी तक किताबों को इससे ज़्यादा श्रेणियों में नहीं डाला था और मेरे पास ज़्यादा किताबों को रखने की जगह भी नहीं थी, न ही पैसा था। इसलिए हर बार, हर बच्चे की पसन्द को ध्यान में रखते हुए मुझे किताबों का चयन करना पड़ता था। लेकिन हर महीने किताबें बदलने से उनकी किताबों में जिज्ञासा बनी रहती और वे नया कुछ पढ़ने के इन्तज़ार में रहते। ठीक यह बात वेलिंगटन ने लिखी है कि बच्चों का पढ़ने की तरफ़ रुझान बढ़ाने के लिए हर बार नई किताबें शामिल करना ज़रूरी है।

कक्षा पुस्तकालय की उपयोगिता केवल पढ़ने के लिए नहीं है बल्कि इसका उपयोग इससे कहीं अधिक है जैसे बच्चों के पढ़ने और लिखने के कौशल को बढ़ाना। पाठ्यपुस्तकों के अलावा छोटी कक्षा के बच्चों को और अधिक पुस्तकें उपलब्ध कराना और उनको आपस में बातचीत के अवसर उपलब्ध कराना। बच्चे स्वयं अपने स्तर पर पढ़ सके और अपने पाठ्यक्रम का विस्तार कर सकें।

पिछले वर्ष हम कीड़ों के बारे में पढ़ रहे थे। पुस्तकालय में हमारे पास मकड़ी के बारे में एक किताब थी जिसे मैंने पढ़कर बच्चों को सुनाया। इसके बाद हर बच्चे ने उस किताब को बहुत ध्यान से पढ़ा। इसी तरह पिछले महीने हम अंग्रेज़ी की कक्षा में 'जंतुओं के बच्चे' पढ़ रहे थे। बच्चों ने कक्षा पुस्तकालय की किताबों से ढूंढ़कर वो किताब निकाल ली जिसमें कई जानवरों के उनके बच्चों के साथ चित्र थे और कुछ नए नाम उन्होंने अपने आप सीख लिए।

बच्चों को जब अपने स्तर पर पढ़ने और अपने साथियों के साथ बातचीत करने का मौक़ा मिलता है तो शब्दों का भंडार बढ़ता है, वे कई सारे नए शब्दों को नए–नए संदर्भों में पढ़ते हैं व उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करते हैं। साथ ही वे जितना ज़्यादा पढ़ते हैं उतनी ही उनकी समझ बढ़ती है जिससे उनको अपनी पाठ्यपुस्तकों को समझने में भी मदद मिलती है। जब बच्चे स्वयं अपने हिसाब से पढ़ते हैं तो उन्हें बार–बार पढ़ने पर कोई रोकता नहीं है, उनकी ग़लतियों पर उन्हें कोई टोकता नहीं है। इसलिए वे अपनी मन–पसन्द चीज़ों को पढ़ने का आनंद ले सकते हैं। इसके विपरीत जब उन्हें कक्षा में रोक–टोककर पढ़ाया जाता है तो पढ़ना उनके लिए नीरस हो जाता है।

पठन का असर उनकी लेखन क्षमता पर भी दिखाई देता है। जो बच्चे कम किताबें पढ़ते हैं वे लिखने में हिचकिचाते हैं, उनके विचारों की अभिव्यक्ति ठीक से नहीं हो पाती है लेकिन ज़्यादा किताबें पढ़नेवाले विद्यार्थी अपने विचारों को बेहतर तरीक़े से व्यक्त कर पाते हैं।

कक्षा पुस्तकालय का लगातार दो साल तक उपयोग करनेवाले बच्चों की भाषा पर क्या प्रभाव पड़ा इसे देखने के लिए विद्या भवन द्वारा गठित रिसर्च फोरम में चर्चा की गई। और एक लघु शोध बच्चों के साथ की गई जिसमें उन्हें एक क्लोज़ टेस्ट दिया गया। इसमें बच्चों को पैराग्राफ को पढ़ने के बाद उसमें छूटी हुई पक्तियों को पूरा करना था। इस टेस्ट को करनेवाले बच्चों की भाषा के क्लोज़ टेस्ट के अंक को उनके द्वारा पढ़ी गई किताबों की संख्या से संबंध देखा गया। जिन बच्चों ने ज़्यादा किताबें पढ़ीं उन्होंने क्लोज़ टेस्ट में ज़्यादा अंक अर्जित

जब बच्चे स्वयं अपने हिसाब से पढ़ते हैं तो उन्हें बार–बार पढ़ने पर कोई रोकता नहीं है, उनकी ग़लतियों पर उन्हें कोई टोकता नहीं है इसलिए वे अपनी मन–पसन्द चीज़ों को पढ़ने का आनन्द ले सकते हैं।



किए। इन्हीं बच्चों का गणित के इबारती सवालों को पढ़कर हल करने का संबंध जांचा गया जिसमें गणित की संक्रिया का मतलब उनकी समझ में आया कि नहीं। इसमें भी किताबों में रुचि रखनेवालों ने गणित में अधिक अंक प्राप्त किए थे। इससे यह बात समझने में मदद मिलती है कि बच्चों की भाषा की समझ पढ़ने से ही बेहतर होती है और इसका प्रभाव अन्य विषयों पर भी दिखाई देता है।

इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए मैंने पढ़ने का असर लेखन क्षमता पर भी देखना चाहा और पिछले वर्ष इस कार्य को बच्चों के साथ प्रारम्भ किया। पिछले वर्ष कक्षा पुस्तकालय में शामिल बच्चों का स्तर देखने के लिए उनसे कुछ विषयों पर एक–एक पैराग्राफ लिखवाए। साल के अन्त में फिर से उनसे लिखने को कहा गया तो पाया कि 6–7 वाक्य लिखनेवाले बच्चों ने साल के आख़िर में उसी विषय पर 22–23 वाक्य लिखे हैं। और नए विषय पर लिखने की उनकी अभिव्यक्ति बढ़ी है। अभी इस पर आगे कार्य चल रहा है।

कक्षा पुस्तकालय में बच्चों का उत्साह बढ़ता जा रहा था परन्तु नई किताबें शामिल कहां से की जाएं? क्योंकि बच्चों की किताबें कम थीं और नई लाने के लिए कोई व्यवस्था नहीं बन रही थी। अपने सहकर्मियों से भी किताबें एकत्र करने पर 15–20 से ज़्यादा किताबें इकट्ठी नहीं कर पाई। हमने किसी तरह से किताबें जुटाईं। अब हमारे पास किताबें तो हैं मगर मैं इसको लेकर हमेशा सजग रहती हूं कि नई–नई और बढ़िया किताबें बच्चों को उपलब्ध करा सकूं। और यह देख सकूं कि आख़िर बच्चे कैसे उनका उपयोग कर रहे हैं। कक्षा पुस्तकालय पर अध्ययन करने पर यह समझने में बेहद मदद मिली कि हमें यदि बच्चों में पढ़ने की ललक जगानी है तो उनके लिए किताबें उपलब्ध करानी ज़रूरी है।

शहनाज़ डी.के., विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि, उदयपुर में शिक्षिका हैं।